एक दो दिन हमें भोजन करने में दिक्कत आयी क्योंकि हमारी चम्मच से खाने की आदत बनायी गई थी और यहाँ हमें हाथ से ही दाल–चावल वगैरह सब खाना था पर बाद में इसकी भी आदत हो गई।

अगले दिन हम एक वाटिका घूमने गए। इस वाटिका में कई फलदार वृक्ष थे । हमने बहुत तरह से तस्वीरें खींची ये तो हमारा नित्य क्रम सा हो गया। जहाँ जाते ढेरों तस्वीरें खींचते। इस दिन हम वहाँ के तौर–तरीकों से पूरी तरह परिचित हुए। मैंने सोचा था कि हर बार की तरह इस बार भी हम होटलों में रूकेंगे किंतु इस बार तो बात ही कुछ और थी। हमे तंबुओं में रहना था अपने बर्तन खुद माँजने–धोने थे। खुद भोजन लाना था। तंबू में उजाला करने का कोई साधन भी नहीं था। यहाँ पूर्णतया अनुशासन था। हम जब भी कहीं जाते हमारे सिर एक जैसी टोपी होती। यहाँ हर कार्य नियमबद्ध था। दूसरे दिन हम एक बड़े मैदान में गए जिसका नाम ''आब्सटेकल क्रॉसिंग ग्राउँड था''। इस मैदान में कई तरह की बाधाएँ थीं जिन्हें हमें पार करना था जिनमें कँटीले तारों के नीचे से रेंगकर जाना, जमीन में गड़े पहियों के बीच रेंगकर निकलना, पेड़ पर लटकी रस्सी चढ़ना जैसी कई बाधाएँ।

सायंकाल हम जटाशंकर मंदिर गए। कहा जाता है कि शिवजी भस्मासुर से बचने के लिए यहाँ छुपे थे। यह एक गहरी गुफा में है।

जिसमें पहुँचने के लिए कई सीढ़ियाँ उतरनी पड़ती हैं। इसमें कई शिवलिंग थे। एक तो केवल जल के टपकने से ही बना है।

उस मंदिर मार्ग में एक चट्टान पर एक महिला बैठी निरंतर ''ऊँ नमः शिवाय'' का जप बहुत ऊँची आवाज में कर रही थी हमें कुछ लोगों ने बताया कि वह पिछले बीस सालों से निरंतर यही कर रही है। दिन में केवल तीन घंटे विश्राम करती है।फिर हम एक नदी में गए उसमें हमने स्नान भी किया।

अगले दिन हम ''डचेस् फॉल'' नामक झरने पर गए , इसमें भी हमने स्नान किया। झरने का रास्ता एक बहुत बड़ी गुफा से होकर जाता है। झरने का बहाव बहुत तेज था और पानी बहुत ठंडा। झरने की आवाज बहुत तेज थी। वहाँ हमने प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य का दर्शन किया। झरने से वापसी की यात्रा बहुत कष्टकर लगी। उसी दिन रात 10 बजे हम लोग नाइट ट्रैकिंग के लिए जंगल में गए।

हमारी हर ट्रैकिंग में चार प्रशिक्षित कुत्ते हमारे साथ चलते, वे कुत्ते कैम्प में ही रहते थे, वे बहुत सतर्क होकर हमारे साथ चलते। रात के अंधेरे में ही हमें चलना था क्योंकि हमें टॉर्च तक जलाना मना था। यद्यपि हमें डर लग रहा था पर हमने ट्रैकिंग पूरी की। आखिरी दिन हम एक झील पर गए यहाँ हमने नौका विहार किया। हम लोगों को बहुत आनंद आया। फिर पिपरिया रेलवे स्टेशन से हमारी वापसी की यात्रा आरम्भ हुई। मुझे इस यात्रा में बहुत सीखने को मिला मैंने बहुत से रोमांचक अनुभव पहली बार किए। कैम्प में हमे विदाई के समय एक स्मृति चिह्न और एक डायरी भेंट स्वरूप मिली। इस तरह तमाम रोमांच अपूर्व आनंद को हृदय में संजोये हम 12 अप्रैल की रात अपने विद्यालय पहुँच गये जो हमारा घर भी है। होम! स्वीट होम!

राहुल राज
दसवीं

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक – प्रधानाचार्य,बी.पी.एस, पिलानी । प्रकाशन – प्रधानाध्यापक, बी.पी.एस.।

मुख्य संपादक – श्री अतुल कुमार मिश्र । परामर्श मंडल – श्री मनोज कुमार, श्री उमेश प्रसाद, श्री नरेश चन्द्र माथुर।

तकनीकी सहयोग – श्री मनीश कुमार शर्मा , श्री अनिल बराड़। रेखांकन– श्रीमती कुशाग्रा भाटी , श्रीमती अश्विनी केदार।

छात्र संपादक – प्रत्यूष रंजन , मुदित खंडेलवाल।

संपर्क सूत्र – विद्या निकेतन , बिड़ला पब्लिक स्कूल , पिलानी – 333031 सुझाव : hmmiddle@bpspilani.edu.in

वार्तिकार

मई, 2017

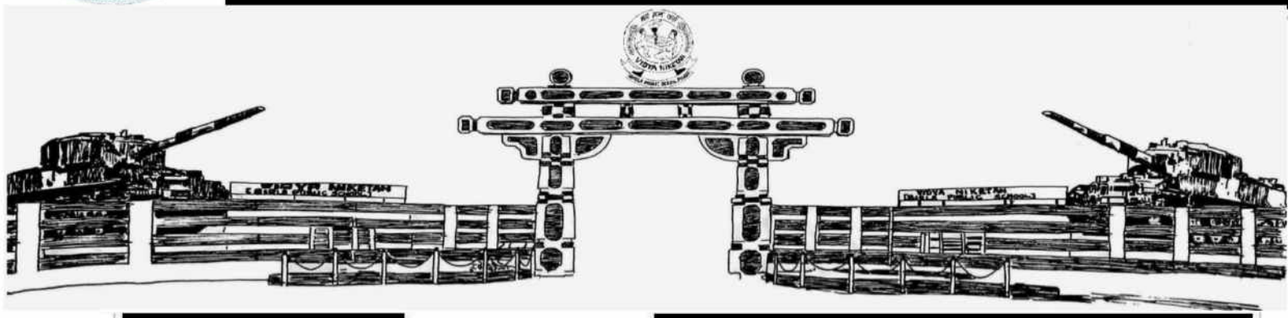

संपादकीय

सत्र परिवर्तन/परिवर्तन प्रकृति का सत्य है/ परिवर्तन अनिवार्य है/परिवर्तन उन्नति का मूल है/प्रकृति में प्रतिक्षण परिवर्तन होता रहता है/ प्रकृति हमें भी निरंतर परिवर्तित करती हुई हमें नित नवीन बनाती चलती है। हमें परिवर्तन को स्वीकार कर , समझ कर स्वयं को इसके लिए तैयार करना है.....

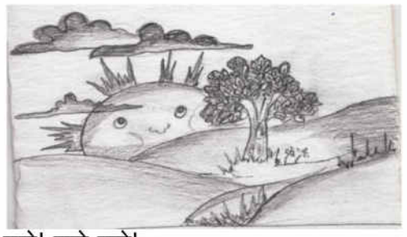

उठो! प्यारे उठो!
देखो पक्षियों ने कलरव कर
ध्वनि मत से रवि के ऊष्ण प्रेम को
अंगीकार कर लिया
तुम भी उठो !
जीवन की ऊष्णता को करो स्वीकार
रक्त की लालिमा बन रगों में बहे प्यार
उठो ! देखो !
रश्मियों ने ओस की बूँदों के
कर थाम लिए
उगा दिए हैं उनके पंख उड़ जाने को
उठो ! तुम भी उठो !
लड़ो जड़ता से, उठो देखो !
रोम–रोम में धरती के स्पंदन !
खुल रहा, कलियों का मादक सा अवगुण्ठन
उठो ! देखो ! किरन–किरन
जगत जीवन को
कर रही विभोर, चहुँ ओर परिवर्तन का
रोर ही रोर
मच रहा शोर
हो गई भोर.....

उपलब्धियाँ

- 1 अप्रैल को मध्य–विभाग से वरिष्ठ–विभाग जाने वाले नवीं कक्षा के छात्रों को विदाई देने के लिए बास्केट बॉल कोर्ट में समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें नवीं के छात्रों ने सबके साथ अपने अनुभव बाँटे। रात्रि–भोज के साथ विदाई समारोह सम्पन्न हुआ।
- 2 अप्रैल को प्रातः 9 बजे नवीं कक्षा के छात्रों की टीम के साथ मध्य–विभाग के शिक्षक दल के मध्य क्रिकेट मैच खेला गया जिसमें शिक्षक टीम ने 56 रनों के अंतर से मैच में जीत हासिल की। ''मैन ऑफ दि मैच'' डॉ0 अभिनव शुक्ल ने नॉट आउट 30 गेंदों में 86 रन की धुआंधार पारी खेली और विजय सिंह राठौर के साथ 125 रनों की रिकार्ड साझेदारी की।
- 2 अप्रैल को ही शिक्षक दल एवं नवीं कक्षा के छात्र दल के बीच एक वॉलीबॉल मैच भी खेला गया। इस मैच में भी शिक्षक दल ने 2–0 के सीधे मुकाबले से छात्र दल को पराजित किया।
- 3 से 11 अप्रैल तक नवीं कक्षा के 96 छात्रों के दल ने भारत स्काउट एवं गाइड द्वारा आयोजित एडवेंचर टूर के लिए पचमढ़ी , म0प्र0 तथा नवीं के ही 68 छात्रों के दल ने बारापत्थर ,नैनीताल में अरबिंदो आश्रम के द्वारा आयोजित एडवेंचर समर यूथ कैम्प में भाग लिया।
- 7 अप्रैल को नये भर्ती छात्र विद्यालय परिवार में सम्मिलित हुए।
- 10 अप्रैल को विद्यालय के लोटस हॉल मे नये छात्रो में सांस्कृतिक प्रतिभा–खोज के लिए एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें मध्य–विभाग के सभी सदनों के नये छात्रों ने नृत्य एवं गायन की प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम का संचालन छात्र शिवांश जायसवाल ने किया। मुख्य–अतिथि श्री एम0पी0 द्विवेदी जी थे। प्रधानाध्यापक डॉ0 अभिनव शुक्ल ने अपने उद्बोधन के साथ कार्यक्रम की सफलता के लिए साधुवाद दिया।
- 11 अप्रैल को विद्यालय के लोटस हॉल में छात्रों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ इसमें सभी सदनों के हाउस मास्टरों ने विभिन्न विषयों पर विचार व्यक्त किया।
- 13 अप्रैल को बैसाखी के उपलक्ष्य में मध्य –विभाग की गोधूलि सम्पन्न हुई। इसमें छात्रों द्वारा भजन , प्रीतम न्योगी , मनराज सिंह , श्री जसकरन सिंह एवं श्री अतुल मिश्र ने बैसाखी पर अपने–अपने विचार व्यक्त किए। गोधूलि का संचालन शिवांश ने किया ।
- दिनांक 24 अप्रैल को पर्यावरण संरक्षण की जागरूकता उत्पन्न के उद्देश्य से मध्य–विभाग द्वारा 'अर्थ डे' का आयोजन किया गया, जिसमें 'पोस्टर मेकिंग' एवं 'स्लोगन राइटिंग' प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त उर्जा संरक्षण पर दिनांक 28 अप्रैल को लोटस हॉल में डिजीटल असेम्बली आयोजित की गई।
- दिनांक 30 अप्रैल को अन्तर्सदनीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का फाइनल मैच दयानंद और गुरूनानक सदन के बीच हुआ, जिसमें दयानंद सदन विजयी हुआ।

साहित्यिकी

सोच बदलो

सोच बदलो
माँ की ममता
बहन का प्यार
बेटी का सम्मान
पत्नी का बलिदान
कितने रूप हैं
इस करिश्में के
जिसमें ढालो,
उसमें ढल जाए/
पर पता नहीं क्यों
लग चुकी है–
किसी की नज़र/
क्या हो गया है
लोगों को/
नीचता की हदें
पार हो चुकीं/
जिस ममता को
पूजन, वंदन चाहिए
उजड़ जाता
उसी का संसार/
जिस प्रेम को
रक्षित कर/ जीना है
उसी से करते
दुराचार/
चाहिए जिस बेटी को
प्रोत्साहन, साधन
उसी का
करते है शोषण/
जिस अर्द्धांगिनी को
चाहिए प्रेम समर्पण
हम दुखाते हैं
उसका मन/
इस समस्या की
जड़ है–हमारी सोच
सिर्फ नारों से
परिवर्तन नहीं आता
उन पर
अमल करना पड़ता है/
इस सोच के
बदलाव से ही
समाज उठता है ऊपर
बहुत ऊपर ———

प्रत्यूष रंजन
दसवीं "स"

देश में बदलाव लाना है

देश में बदलाव लाना है
देश को बदलना है।
देश से झूठ को हटाना है
सत्य को ले आना है।

अंधकार में पड़े हैं हम
प्रकाश ढूँढ लाना है।
हर घर में आज हमें
उजाला भर जाना है।

देश के लिए सब को
हर त्याग करना है।
देश की रक्षा हेतु
प्राण उत्सर्ग करना है।

हर नारी को सम्मान देना है
स्वच्छता को अपनाना है ।
जो भारत का अपमान करे
उसे सबक सिखाना है।

देश में बदलाव लाना है
देश को बदलना है।।

राज वर्धन सिंह
आठवीं

वर्षा

मैं देख रहा था घर की खिड़की से बाहर
पक्षी उड़ रहे थे नील गगन में आजाद मगन
खेतों में फसल लहलहा रही थी आनंद मन
एकदम बिजली कड़की, कौंध लपलपा गई
नीला आसमान हुआ काली कोठरी सा–

धीरे – धीरे बूँदा–बाँदी तेज हुई
और ज़ोरदार बारिश शुरू हो गई
सबसे पहले मिट्टी की सौंधी खुशबू
मुझे सहला कर चली गई

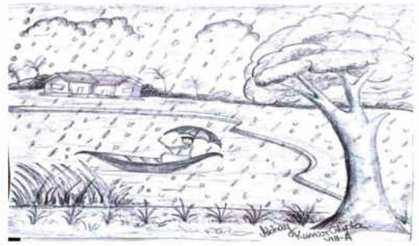

देखा कच्ची सड़कों को तालाब बनते
एक बच्चा सर पर रखे बस्ता बेबस सा
पेड़ के नीचे चुपचाप खड़ा था
धुले–धुले से खड़े प्रसन्न वदन पेड़ सारे

वनस्पतियों की हो गई अच्छी सिंचाई
खुश किसान अब होगी अच्छी कमाई
पका देने वाली गर्मी से राहत मिली
यूँ लगा मुझे हर तरफ जन्नत बिखरी

शाश्वत आनंद पांडेय
दसवीं "अ"

भारतीय संस्कृति पर आघात के कारण

आज जो संस्कृति हम लोग अपना रहे हैं, वह हमारी भारतीय संस्कृति से बिलकुल अलग हैं। इस बदलती संस्कृति का सबसे मुख्य कारण है अंग्रेजों का भारत में आगमन। अंग्रेजों ने जब देखा कि सोने की चिड़िया कहलाने वाले इस देश को खत्म करना है तो इसकी संस्कृति और एकता को जड़ से मिटाना होगा। अंग्रेजों ने बिलकुल यही किया, पहले तो उन्होंने हमारी एकता पर चोट की, धार्मिक रूप से हमें एक दूसरे के खिलाफ भड़काया, लड़वाया। इस तरह वे हमारे देश पर कब्जा कर राज करने में कामयाब रहे। राज कायम कर उन्होंने न केवल सोने की चिड़िया को जी भर लूटा बल्कि हमारी संस्कृति को पूरी तरह मिटाने का भरपूर प्रयास किया, जिसमें वे बहुत हद तक कामयाब भी हुए। अंगेजों ने हर तरफ से हमारी संस्कृति पर प्रहार किया, चाहे वह रहन–सहन हो, खान – पान हो या वेश–भूशा हो या फिर हमारी शिक्षा व्यवस्था।

हमारी शिक्षा–व्यवस्था को तो उन्होंने पूरी तरह बदल दिया। स्वतंत्रता के बाद अंग्रेजों की इस विरासत को हमारे कुछ मानसिक गुलामी का चोला ओढ़े काले अंग्रेजों ने पूरी तरह आगे बढ़ाया। एकता मिटी, देश में दंगे होने लगे, देश कई टुकड़ों में बँट गया। हमने अपनी संस्कृति पूरी तरह भुला दी। हम दिखावटीपन , खोखले आडम्बरों में उलझ पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर अपनी जड़ों से पूरी तरह उखड़ चुके हैं। इस शोचनीय स्थिति से बाहर निकलने के लिए हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। सारे देशवासियों को दृढ़ संकल्प की जरूरत है।

ध्रुव अग्रवाल
दसवीं

माँ

रात–रात जब मैं रोता था
मुझे अपने आँचल में छिपा चुप कराती
जब मैं खुश होता
लाड में भर मुझे दुलराती
ऐसी है मेरी माँ

हर कदम मेरा साथ देती
हर मुश्किल आराम से सुलझाती
मुझे जब भी चोट लगती
तब खुद रोती मेरा दर्द
महसूस करती
मेरी जिंदगी का सबसे
अहम किरदार हैं वो
सारे जहाँ से काबिल बनाने वाली
मेरी सिरजनहार हैं वो
माँ
मेरी माँ

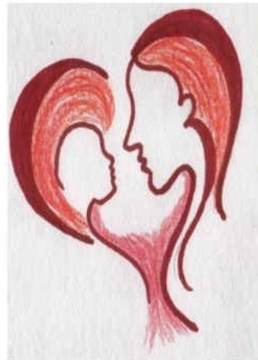

मुदित खण्डेलवाल
आठवीं

वह पचमढ़ी का रोमांच

वाह! कैसा वक्त आया मेरे लिए, रोमांच से भरपूर, भाई! मज़ा आ गया! मेरे लिए यह वक्त था शैक्षिक भ्रमण का, यह एक यात्रा जिसने मुझे बहुत कुछ सिखाया, अनुभव कराया।

ओह! कितना आज़ाद था मैं उस वक्त, और आज़ाद भी क्यों न होता मेरी वार्षिक परीक्षाएँ जो समाप्त हो चुकी थीं। फिर अगले दस बारह दिनों तक कोई पढ़ाई भी नहीं। पर मुझे क्या पता था कि कक्षा की पढ़ाई जरूर नहीं होनी थी पर व्यावहारिक दुनिया की अनुभव की पढ़ाई भरपूर होने वाली है। अस्तु!

हमारे प्रधानाध्यापक महोदय ने हमारी नवीं कक्षा के लिए रोमांचक भ्रमण का आयोजन किया हुआ था। कुल मिला कर हम एक सौ अट्ठावन छात्र, नब्बे एवं अड़सठ के दो समूहों में विभजित हुए और चल पड़े अपनी–अपनी रोमांच की दुनिया की ओर। तीन अप्रैल की दोपहर हमारा रोमांचक सफर शुरू हुआ।

हमारा नब्बे छात्रों का समूह "भारत स्काउट एवं गाइड" के द्वारा आयोजित समर एडवेंचर कैम्प, पचमढ़ी की ओर रवाना हुआ और दूसरा अड़सठ छात्रों का समूह "समर यूथ कैम्प" के लिए श्री अरबिंदो आश्रम, बारापत्थर नैनीताल।

मुझे पचमढ़ी ही जाना था क्योंकि मैं पहले एक बार नैनीताल जा चुका था। पहले तो मुझे लगा कि मैं अपने मित्रों के साथ नहीं रह पाऊँगा पर बाद में सब हो गया। ओह! लगभग डेढ़ दिन की उबाऊ और थकान भरी यात्रा के बाद हम पचमढ़ी पहुँचे। हमारी आधी यात्रा तो बस में सोते–सोते गुजर गई। 4 अप्रैल की रात हम पचमढ़ी भारत स्काउट एवं गाइड के कैम्प पहुँचे। यह संस्था विद्यार्थियों को रोमांच और कैम्पिंग का अनुभव कराता है। लगभग आधी रात तक हमें अपने–अपने तम्बू मिले। पहली रात ही हमें एकत्र कर बताया गया कि हमें यहाँ कहाँ–कहाँ जाना है, कैसे रहना है, फिर हमें रजाई–गद्दे दिए गए।

भोजन के लिए हमें थाली ग्लास दिए गए और साथ ही यह हिदायत भी कि हर भोजन के बाद हमें इन्हें स्वयं माँज–धो कर अपने पास रखने हैं जब तक हम यहाँ रहेंगे। यही नहीं ट्रैकिंग के दौरान भी इन्हें अपने साथ रखना है।